18.04.2020

M. Com. IV Semester

Paper – Ist

Subject – Advanced Cost Accounting
(उच्चतर लागत लेखांकन)

Lecture By :

Dr. Rajesh Kesari
Associate Professor
(Ex. HOD & Dean)
Commerce faculty
Nehru Gram Bharati
(Deemed to be)
University, Prayagraj

Topic 1 : Meaning, objectives, Advantages & limitation of Cost-Accounting

Topic 2 : Installation & steps of Installing a Costing systems, Difference between cost and financial Accounts.

१-लागत लेखांकन का विकास

(DEVELOPMENT OF COST ACCOUNTING)

लागत लेखांकन प्रमुख रूप से 20वीं सदी की देन है। इसका कुछ वर्णन 1832 में प्रकाशित प्रोफेसर चार्ल्स बेवेज की पुस्तक 'द इकानमी ऑफ मशीनरी एण्ड मैन्युफैक्चर' (The Economy of Machinery and manufacture) में भी मिलता है।

लागत लेखांकन का जन्म व विकास निम्नलिखित कारणों से हुआ है:

1. यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति,
2. विवेकीकरण तथा वैज्ञानिक प्रबन्ध
3. व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा
4. विश्वव्यापी युद्ध
5. मूल्य नियन्त्रण
6. राज्य सहायता व सरकारी नीति
7. देश के संसाधनों का सर्वोत्तम प्रयोग
8. उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमण्डलीकरण को बढ़ावा

उपर्युक्त कारणों से यह आवश्यक समाझ गया कि कम लागत पर, गुणवत्ता प्रदान वस्तुओं का उत्पादन किया जाये और इसके लिए लागत सम्बन्धी लेखे रखे जायें।

लागत लेखांकन का भारत में विकासः
(Development of cost Accounting in India)

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में औद्योगिक विकास का अभाव था जिसके कारण लागत लेखांकन की आवश्यकता एवं नियमों के बारे में कोई कानून ठीक से प्रतिपादित नहीं हुए। स्वतन्त्रता के पश्चात् सन् 1947 में औद्योगिक नीति के विकास के द्वारा औद्योगिक विकास को बल मिला और इस कारण भारत में लागत लेखांकन का विकास हुआ। सन् 1959 में 'कास्ट एण्ड वर्क्स एकाउन्टेण्ट ऐक्ट' भारत सरकार द्वारा पारित किया गया और तत्पश्चात् ''इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एण्ड वर्क्स एकाउन्टेण्ट (I.C.W.A.I.) के रूप में एक स्वतन्त्र उपक्रम जिसका प्रधान कार्यालय कोलकाता में स्थापित किया गया है। कम्पनी अधिनियम, 1956 में परिवर्तन करके लागत लेखांकन करना व उसका अंकेक्षण करने का प्रावधान किया गया। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा 44 उत्पादों से सम्बन्धित उद्योगों को लागत लेखांकन बनाना व उनका अंकेक्षण कराना अनिवार्य कर दिया गया है।

लागत लेखांकन का अर्थ एवं परिभाषाएं
(Meaning and Definition of cost Accounting)

लागत लेखांकन सामान्य लेखांकन की एक विशिष्ट शाखा है जिसके अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल लागत एवं प्रति इकाई लागत न केवल उत्पादन कार्य समाप्त होने पर, वरन् उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर ज्ञात की जा सकती है, जिसके सिद्धान्तों, पद्धतियों एवं तकनीकों को अपनाकर लागत को नियंत्रित किया

जा सकता है तथा उत्पादन प्रक्रिया में संलग्न सभी विभागों का मार्ग दर्शन किया जा सकता है। लागत लेखांकन की कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्न प्रकार है।

1. आई0सी0एम0ए0 लन्दन के अनुसार, – "लागत ज्ञात करने की तकनीक एवं प्रक्रिया को लागत लेखांकन कहते है।"
2. वाल्टर डब्लू. बिग के अनुसार,– " लागत लेखांकन व्ययों के ऐसे विश्लेषण एवं वर्गीकरण की व्यवस्था है। जिससे उत्पादन की किसी विशिष्ट इकाई की कुल लागत शुद्धतापूर्वक ज्ञात हो सके और साथ ही यह भी ज्ञात हो सके कि कुल लागत किस प्रकार ज्ञात हुई।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लागत लेखाकन विज्ञान एवं कला दोनो है, इसके अन्तर्गत व्ययों का वर्गीकरण, अभिलेखन, आवंटन की एक ऐसी विधि है जिससे उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल लागत एवं प्रति इकाई लागत ज्ञात की जा सकें, तथा इसके साथ–साथ अंकन, लागत निर्धारण, लागत नियन्त्रण, लाभदायक एवं विक्रय मूल्य का निर्धारण भी किया जाता है।

लागत लेखांकन की प्रकृति
(Nature of cost Accounting)

लागत लेखांकन की प्रकृति से आशय यह है कि लागत लेखांकन विज्ञान है या कला अथवा दोनों। इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि लागत लेखांकन विज्ञान और कला दोनों है, जो निम्न विवेचन से स्पष्ट है–

लागत लेखांकन एक विज्ञान के रूप में – लागत लेखांकन एक विज्ञान है, क्योंकि अन्य विज्ञानों की भाँति इसके भी अनेक नियम, सिद्धान्त, विधियो एवं तकनीकें है, जिसके सम्बन्ध में शिक्षण और प्रशिक्षण प्राप्त करके ज्ञान अर्जित किया जाता है और यह ज्ञान क्रमबद्ध एवं विधिवत होना चाहिए। लागत लेखांकन की निम्नलिखित तकनीके है– इकाई लागत तकनीक, ठेका लागत, उपकार्य लागत एवं समूह लागत तकनीक, प्रक्रिया लागत तकनीक, परिचालन लागत तकनीक, मानक लागत एवं बजटरी लागत तकनीक आदि।

लागत लेखांकन एक कला के रूप में – लागत लेखांकन एक कला भी है, जिसके अन्तर्गत अनेक विकल्पों में से एक श्रेष्ठ विकल्प का चुनाव करना होता है, यह अभ्यास एवं अनुभव के द्वारा भी प्राप्त किया जा सकता है। प्रमापित लागत विधि, सीमान्त लागत विधि, बजटरी नियन्त्रण विधि आदि ऐसे तकनीके हैं जिनकी सहायता से लागत लेखांकक यह निर्णय ले सकता है कि लागतों को किस प्रकार नियन्त्रित किया जाये, पुराने प्लाण्ट के स्थान पर नया प्लाण्ट प्रतिस्थापित किया जाये या नही, किसी विशिष्ट उत्पाद का उत्पादन चालू रखना या बन्द रखना उचित रहेगा आदि। इस प्रकार लागत लेखांकन की तकनीकों की सहायता से संस्था की लाभार्जन क्षमता बढ़ाने के लिए उपर्युक्त समय पर महत्वपूर्ण निर्णय लिये जा सकते है।

लागत लेखांकन के सिद्धान्त–
(Principles of cost Accounting)

लागत के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित है–

1. लागत का सम्बन्ध उसके कारण से होता है एक लागत का निकटतम सम्बन्ध उसके कारण से होता है जैसेः कारखाने का किराया कारखाने से ही सम्बन्धित होता है, कार्यालय से नहीं अतः इसे

कार्यालय व्यय में नहीं किया जाता है, एक विशेष मशीन की मरम्मत का व्यय उसी मशीन पर डाला जाता है किसी अन्य मशीन पर नहीं।

2. लागत लेखांकन दोहरी प्रविष्टि सिद्धान्त पर ही आधारित होता है–वित्तीय लेखांकन दोहरी प्रविष्टि प्रणाली पर आधारित होता है वैसे ही लागत के लेखे भी डेबिट – क्रेडित के सिद्धान्त पर इस प्रणली में रखे जाते है।

3. असामान्य लागतें लागत लेखांकन में सम्मिलित नहीं होती है– असामान्य कारणों से हुई हानि की लागत को लाभ–हानि खाते में दिखाया जाता है चूँकि इसका सम्बन्ध उत्पादन की सामान्य क्रिया से नहीं है अतः इन्हें उत्पादन पर भार के रूप में नहीं दिखाया जाता है जैसेः– अग्नि प्रकोप, चोरी, उपद्रव, हडताले व दुर्घटना आदि।

4. भूतकाल की लागतें भविष्य में वसूल नहीं होती है– ऐसे व्यय जो विगत अवधि के है और यदि उन व्ययों को उसी विगत अवधि में वसूल नही किया गया हो तो उन व्ययों को भविष्य में वसूल नहीं किया जाता है। ऐसा करने से, भविष्य में बनाया जाने वाला लागत विवरण पत्र शुद्ध लागत नहीं निश्चित कर सकेगा।

5. किये गये व्यय को ही लागत माना जाता हैः– किये गये व्यय का आशय वास्तविक रूप में अथवा सैद्धन्तिक रूप में किये जाने वाले व्यय से है। ऐसा व्यय जो हुआ ही नही है लागत का अंग नहीं बनता है। इसीलिये, विक्रय व्यय का भार उन्हीं वस्तुओं पर डाला जाता है, जो कि बेची गयी हो।

6. लागत लेखांकन रूढ़िवादी परम्परा का पालन नहीं करता हैः– वित्तीय लेखों में अन्तिम स्टाक का मूल्यांकन लागत मूल्य या बाजार मूल्य दोंनो में से जो कम होता है, के सिद्धान्त पर लागू होता है जबकि लागत लेखों में अन्तिम स्टाक का मूल्यांकन केवल लागत मूल्य पर ही मूल्यांकित होता है।

लागत लेखांकन के उद्देश्य अथवा कार्य–

(Objects or functions of cost Accounting)

लागत लेखांकन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. लागत निर्धारण (Cost Ascertainment)– लागत निर्धारित करने के लिए लागत के सभी तत्वों का संग्रहण, वर्गीकरण, तथा विश्लेषण आवश्यक है। इससे वस्तुओं या सेवाओं की कुल लागत तथा प्रति इकाई लागत ज्ञात की जा सकती है।

2. लागत नियन्त्रण (Cost Control)– लागत लेखांकन का दूसरा प्रमुख उद्देश्य लागत पर नियंत्रण रखना होता है जिससे अकुशलताओं, असावधानियों व बर्बादियों को कम किया जा सके। लागत पर नियन्त्रण प्रमाप लागत विधि और बजटरी नियंत्रण द्वारा किया जाता है।

3. लाभदायकता का निर्धारण करना(Ascertainment of Profitability)–लागत लेखांकन का उद्देश्य उन सभी क्रियाओं का लाभ जानना होता है जों कि वर्तमान में चलायी जा रही है। वह नया उत्पाद कितना लाभ प्रदान करेगा तथा प्रबन्ध को ऐसे तरीके सुझाना जिससे लाभ अधिकतम हो सके।

4. विक्रय मूल्य का निर्धारण करना (Deter mination of Selling price)– लागत लेखांकन उन सीमाओं को निर्धारित करता है जहाँ तक कि विक्री मूल्य घटाया या बढ़ाया जा सके। वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करने एवं निविदा मूल्य निश्चित करने के लिए सूचनायें लागत लेखांकन द्वारा ही प्राप्त होती है।

5. योजना निर्माण एवं नीति निर्धारण (Plann preparation and policy formulation)–लागत लेखांकन भविष्य के लिए योजनाएं बनाने एवं नीतियां निर्धारित करने हेतु उचित सूचनाएं प्रदान करता है जिसकी सहायता से प्रबन्धक महत्वपूर्ण निर्णय ले सकता है।

6. लागत में कमी (Cost Reduction)–लागत में कमी उत्पादन की नई तकनीकों को विकसित कर या क्षमता का गहन उपयोंग कर, क्षय की मात्रा में कमी करके की जा सकती है जैसे– उत्पाद डिजाइन, प्लाण्ट ले आउट, उत्पादन विधि, कच्चे माल का स्नानापन्न प्रयोग, विपणन तकनीकें, स्टाक नियन्त्रण आदि।

7. वैद्यानिक दायित्व की पूर्ति करना (Compliance of Legal Requirement)– कम्पनी अधिनियम की धारा 209(1) (डी) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा अनेक उद्योगों के लिए लागत लेखे रखना अनिवार्य कर दिया गया है और इस प्रकार लागत लेखांकन का एक उद्देश्य वैद्यानिक दायित्व को पूरा करना भी है।

लागत लेखांकन का महत्व एवं लाभ

(Importance or Advantages of cost Accounting)

वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा के युग में लागत लेखांकन की उपयोगिता एवं महत्व में जिस गति से वृद्धि हो रही है उससे कोई भी अनभिज्ञ नही हैं। लागत लेखांकन से उत्पादकों, प्रबन्धकों, कर्मचारियों, उपभोक्ताओं, विनियोंजकों तथा सरकार के सभी वर्ग लाभान्वित होते है, लागत लेखा के प्रमुख लाभ अग्रलिखित है–

(अ) प्रबन्धको व उत्पादकों को लाभ (Advantages to managers and Manufactures): -

1. **सामग्री प्रबन्ध में कुशलता**– यह प्रणाली सामग्री के क्रय, भण्डारण तथा निर्गमन पर अच्छा नियंत्रण रखती है। सामग्री को ठीक मूल्यों पर खरीदा जाता, है स्टोर में सुव्यवस्थित रूप में रखा जाता है तथा उत्पादन के लिए सामग्री के निर्गमन की उचित व्यवस्था की जाती है।

2. **श्रम लागत पर नियन्त्रण**– श्रम के सम्बन्ध मे, श्रम लागत के लेखे विस्तृत रूप से रखे जाते है। सुस्त समय व अधिसमय को कम किया जाता है तथा श्रमिको की कार्यकुशलता मापी जाती है। इस प्रकार उत्पादन बढ़ता है व लागत कम आती है।

3. **मशीनों का सदुपयोग**– मशीनें व प्लाण्ट अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर रहे है अथवा नहीं कितन समय तक ये सुस्त रहे है, कितना उत्पादन कर रहें आदि को मापा जाता है।

4. **उत्पादन नीति का निर्धारण**– उत्पादन नीति निर्धारण करने मे यह प्रणाली सहायक होती है। किस उत्पाद या वस्तु का उत्पादन बढ़ाया जाय या कम किया जाय, किस नये उत्पाद को बाजार में लाया जाय, किन क्षेत्रों में अधिक विज्ञापन किया जाय आदि महत्वपूर्ण निर्णय प्रबन्धक द्वारा लिये जाते है।

5. **बजटरी नियन्त्रण** – उत्पादन के कारखानें व्ययों, प्रशासन व्यायों तथा बिक्री व वितरण व्ययों को पिछली अवधि के व्ययों से अथवा बजट किये व्ययों से तुलना कर नियन्त्रित किया जाता है।

(ब) कर्मचारियों को लाभ (Advantages to Employees)- लागत लेखाकंन द्वारा श्रमिको को मजदूरी का उचित वितरण करके श्रमिको की कार्यक्षमता में वृद्धि किया जा सकता है। जिससे श्रमिको को कुशल बनाने में सहायता मिलती है इससे औधोगिक संघर्षों में कमी आती है।

(स) ऋणदाताओ तथा विनियोजकों को लाभ (Advantages to Creditors & Investers)- ऋणदाता या विनियोक्ता ऐसी संस्था में अपने कोषों को विनियोजन करते है जिसकी लाभार्जन क्षमता अच्छी होती है, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है तथा भविष्य उज्जवल होता हैं।

(द) उपभोक्ताओं को लाभ (Advantages to Consumers)- लागत लेखांकन पद्वति के द्वारा वस्तुओं को कम से कम लागत मूल्य पर निर्मित किया जाता है जिससे उपभोक्ता को न्यूनतम लागत पर श्रेष्ठतम वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

(थ) राष्ट्र को लाभ (Advantages to Nation)- प्रत्येक सरकार अपने देश की आर्थिक प्रगति के लिए योजना बनाती है। योजनाओं के बनाने के लिए लागत व्यय के ऑकड़े एकत्र किये जाते है। इन ऑकड़ों के आधार पर ही सरकार यह निश्चित कर पाती है कि किन–किन उद्योगों को बढ़ावा दिया जायें तथा आर्थिक सहायता दी जाये।

लागत लेखाकंन की सीमांए–

(Limitations of cost Accounting)

लागत लेखाकंन के सिद्धान्त एक दम दृढ़ न होकर समय एंव परिस्थितियों के अनुरूप बदलते रहे है। लागत लेखाकंन की मुख्य सीमाएं इस प्रकार है–

1. **व्यावसायिक उपक्रमों में लागू नहीं**– यह पद्धति उन व्यवसायों में लागू की जाती है जहॉ पर वस्तुओं का उत्पादन या सेवाओं का कार्य होता हैं व्यापारिक संस्थानों के लिए यह लेखाकंन पद्धति उपयोगी नहीं है।
2. **अनुमानों पर आधरित**– लागत लेखाकंन में अप्रत्यक्ष व्ययों का लेखा वास्ताविक नहीं होता बल्कि अनुमानित ही होता है।
3. **शुद्ध वित्तीय मदों की उपेक्षा**– लागत लेखांकन में शुद्ध वित्तीय प्रकार के अनेक व्यय जिनका सम्बन्ध उत्पादन, विकय व वितरण से नहीं होता, शामिल नहीं किये जाते, यद्यपि उनका लेखा वित्तीय लेखाकंन में होता है।

4. **वित्तीय लेखों के मिलान की आवश्यकता**–लागत लेखों और वित्तीय लेखों के लाभों में अन्तर हो जाने के कारण लेखों के मिलान की आवश्यकता होती है, इसलिए लागत लेखों का वित्तीय लेखों से मिलान करना पड़ता है।

5. **अनुपयुक्त होना**– लागत लेखाकंन की प्रणाली बड़े औद्योगिक संगठनों के लिए उपयुक्त होती है लेकिन लघु एंव मध्यम स्तर के उद्योंगों के लिए यह काफी खर्चीली एंव अनुपयुक्त मानी जाती है।

आदर्श लागत लेखांकन पद्धति की स्थापना या लक्षण
(Instalation or characteristics of Ideal system of cost Accounting)

एक आदर्श लागत लेखाकंन प्रणली में निम्नलिखित सामान्य गुण या विशेषताएं होनी चाहिए–

1. **व्यवसाय के लिए उपयुक्तता**– एक लागत लेखाकंन व्यवस्था व्यवसाय की प्रकृति, परिस्थितियों, आवश्यकताओं एंव आकार के अनुरूप होनी चाहिए।
2. **सरलता**–लागत लेखाकंन व्यवस्था सरल एंव स्पष्ट होनी चाहिए ताकि साधारण व्यक्ति भी आसानी से समझ सकें।
3. **लोचपूर्ण**– लागत लेखाकंन व्यवस्था अधिक लोचपूर्ण हो ताकि वह बदलते परिवेश एंव परिस्थितियों के अनुरूप ढ़ल सकें।
4. **मितव्ययी**–एक लागत लेखाकंन व्यवस्था अधिक खर्चीली न हो तथा व्यवसाय की वित्तीय क्षमता के अनुरूप ढलने में समर्थ हो।
5. **तुलनात्मक**– लागत लेखाकंन प्रणाली ऐसी हो जिसमें इसके चालू वर्ष के सूचनाओं की तुलना गतवर्ष की सूचनाओं से आसानी से की जा सके।
6. **शीघ्र सूचनाएं देने की क्षमता**– यह प्रणाली ऐसी होनी चाहिए कि न केवल कार्य के होने पर ही वरन् उसकी अधूरी अवस्था में भी लागत व्यय से सम्बन्धित समस्त सूचनाएं शीध्रता से मिल सकें।
7. **व्ययों का विभागीकरण**– लागतों की शुद्धता बनाने हेतु उपरिव्ययों के संग्रहण, वितरण, संविलयन एंव विभाजन की एक सुदृढ़ योजना अपनायी जानी चाहिए।
8. **लागत एंव वित्तीय लेखों का समाधान**– यह प्रणाली इस योग्य होनी चाहिए कि लागत लेखाकंन तथा वित्तीय लेखाकंन के परिणामों का मिलान किया जा सके तथा अन्तर के कारण ज्ञात करके उनको दूर किया जा सके।
9. **लागत लेखाकंन के कर्तव्य एंव दायित्व**–एक अच्छी व्यवस्था में लागत लेखाकार के कर्तव्य, अधिकार एंव दायित्व का स्पष्टतया उल्लेख होना चाहिए।

लागत लेखाकंन स्थापना के चरण
(Steps of Installing a costing System)

एक लागत प्रणाली की स्थापना व्यय नही हैं बल्कि एक विनियोग है क्योंकि जो व्यय इसकी स्थापना पर किया जाता है इससे कहीं अधिक उससे पुरूस्कार प्राप्त होता है। लागत लेखाकंन व्यवस्था की स्थापना हेतु निम्न चरण निम्नलिखित है–

1. **वर्तमान संगठन एवं कार्य व्यवस्था का अध्ययन–** इस संदर्भ में यह तथ्य कहे जा सकते हैं– व्यवसाय की प्रकृति तथा चलाये जा रहे कार्यकम एंव प्रकिया का स्वभाव, विभिन्न अधिकारियों के अधिकार एंव दायित्वों की सीमाएं स्पष्ट होनी चाहिए। संयन्त्र की साज –सज्जा, सामग्री के क्षय से निपटने का तरीका, समय रिकार्ड करने की प्रणाली, मजदूरी की गणना तथा भुगतान की पद्धति , कारखाने को उत्पादन हेतु आदेश भेजने की व्यवस्था तथा स्थायी, अर्द्धस्थायी एंव परिवर्तनशील उपरिव्यों की मात्रा आदि का अध्ययन किया जाता है।
2. **लागत लेखों की संरचना का निश्चय–** लागत लेखाकंन की कौंन सी 'व्यवस्था उपयुक्त होगी तथा कौन–कौन विवरण आवश्यक होगें इनका निर्धारण उत्पादन प्रकिया तथा अन्य सहायक सेवाओ के व्यापक अध्ययन से किया जा सकता हैं।
3. **लागत दरों का निर्धारण –** लागतों के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष विभाजन, अप्रत्यक्ष व्ययों के उत्पादन, विकय एंव वितरण व्ययों का विभाजन सभी प्रकार के क्षयों का निपटारा, सामग्री निर्गमन का मूल्याकन, उपरिव्ययों कों चार्ज करना तथा उपरिव्ययों दरों की गणना के बारे में जानकारी पाने से पूर्व कारखानें की दशाओं एंव निर्णयों का व्यापक अध्ययन करना होगा।
4. **व्यवस्था को लागू करना–** कोई भी लागत लेखाकंन व्यवस्था बिना सभी अधिकारियों के सहयोग के सफल नही हो सकती। व्यवस्था को लागू करने से पहले मूल बातों को उन्हें समझाया जाये तथा उनसे होने वाले लाभों को व्यक्तिगत एंव संस्थागत दृष्टि से बताया जाये।
5. **लागत लेखा कार्यालय का संगठन–** यह हमेशा अच्छा रहता है कि लागत लेखा विभाग कारखाने के पास बने ताकि कागजों को आगे जाने में देरी न हो तथा असमानताओं एवं संदेहों को दूर किया जा सके, इस विभाग के कर्मचारी कारखाने में जाने के लिए स्वतन्त्र हो तभी वे अपना कर्तव्य भली प्रकार निभा सकते है। लागत लेखा कार्यालय का अन्य विभागो से सम्बन्ध होना चाहिए।

लागत लेखाकंन की स्थापना में आने वाली कठिनाइयां

(Difficulties in installing a costing system)

एक लागत लेखाकार को लेखाकंन व्यवस्था की स्थापना के समय अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जो निम्नलिखित है–

1. **उच्च स्तरीय प्रबन्ध द्वारा पूर्ण सहयोग न मिलना–** अनेक मामलों में लागत लेखाकंन व्यवस्था को विभिन कियात्मक क्षेत्रों में उच्च स्तरीय प्रबन्ध के समर्थन के बिना ही प्रारम्भ किया जाता है। यहाँ तक कि प्रबन्ध संचालक और अध्यक्ष भी बिना विभागीय अध्यक्षो के परामर्श के इस व्यवस्था को लागू कर देते है।

2. **विद्यमान लेखाकंन कर्मचारियों द्वारा विरोध**– जब भी कोई नई व्यवस्था लागू की जाती है तो उसका विरोध होना स्वाभाविक है क्योंकि विद्यमान कर्मचारी यह अनुभव कर सकते है कि संस्था में उनका महत्व कम हो सकता है या उनकी स्थिति डावाडोल हो जाएगी।

3. **संगठन के अन्य स्तरों पर असहयोग**– फोरमैन, सुपरवाइजर तथा अन्य कर्मचारी इस व्यवस्था का विरोध कर सकते है क्योंकि इस व्यवस्था के लागू होने से निःसंदेह उनको अतिरिक्त कागजी कार्यवाही करनी पड़ेगी । इससे संस्था में कोई नई व्यवस्था नहीं लागू हो पाती है।

4. **प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव**– ऐसे लागत लेखाकारों की संख्या कम हो सकती है जो लागत विश्लेषण, लागत नियत्रण और लागत में कमी जैसे जटिल मामलों को सम्भाल सके। लागत लेखाकंन विभाग प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव में चलने में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती है।

5. **लागत लेखाकंन की व्यवस्था करने में अधिक लागत** – इस व्यवस्था को सही ढ़ग एवं सुचारू रूप से चलाने के लिए विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करना पड़ता है जिसके कारण कागजी कार्यवाही में वृद्धि हो सकती है अतः इस व्यवस्था की परिचालन लागत में बृद्धि हो जाती है जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं की प्रति इकाई लागत भी बढ़ जाती है।

लागत एंव वित्तीय लेखों में अन्तर

(Difference between cost and financial accounts)

	अन्तर का आधार	लागत लेखें	वित्तीय लेखें
1.	लेखों का प्रयोग	ये लेखे वस्तु का उत्पादन करने या सेवा प्रदान करने वाली संस्थाओं द्वारा रखें जाते है।	ये लेखें सभी संस्थाओं द्वारा रखे जाते है चाहे वे औद्योगिक हो या व्यापारिक।
2.	अनुमानित	लागत लेखाकंन में जो भी व्यय दर्शाये जाते वे अनुमानित होते है।	इसके अन्तर्गत सभी व्यय वास्तविक होते है।
3.	नियन्त्रण का क्षेत्र	यह सामग्री तथा स्टोर के निर्गमन व मूल्यांकन पर जितना विशेष नियन्त्रण रखता है उतना रोकड़ पर नहीं।	इसमें रोकड़ पर जितना नियन्त्रण रखा जाता है उतना सामग्री व स्टोर पर नहीं।
4.	व्ययों का लेखा	लागत लेखा पद्धति में व्ययों का विश्लेषणात्मक रीति से लेखा किया जाता है।	वित्तीय लेखे व्ययों का समग्र चित्र प्रस्तुत करते है।

5.	टेण्डर मूल्य की गणना	इसके अन्तर्गत चालू वर्ष मे किसी वस्त की पूर्ति करने के लिए टेन्डर मूल्य निकालना सरल होता है।	इसके अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था नहीं की जाती है।
6.	विभिन्न विभागों की कार्यकुशलता	इसके अन्तर्गत विभिन्न विभागों की कार्यक्षमता व कार्यकुशलता ज्ञात हो जाती है।	इसमें ऐसा सम्भव नहीं है।
7.	लाभ का प्रत्येक समय निर्धारण सम्भव	लागत लेखे प्रत्येक समय लागत और लाभ बताते है।	इसके अन्तर्गत वर्ष के अन्त में अन्तिम खाते तैयार करके लाभ–हानि तथा आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है।
8.	ऐच्छिक अंकेक्षण	यह कुछ कम्पनियो के लिए अनिवार्य है।	यह सभी प्रकार के कम्पनियों के लिए अनिवार्य कर दिया गया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)-

1. लागत लेखाकंन क्या है ? इसके उद्देश्य व सीमाएं बताइये ?

   What is cost Accounting ? What is the objects and its limitations?

2. लागत लेखे से आप क्या समझते हैं ? लागत लेखों से प्राप्त लाभों का वर्णन कीजिए ?

   What o you understand by cost accounts ? Describe the benefits obtained from cost accounts?

3. लागत लेखाकंन किसे कहते है ? क्या यह वित्तीय लेखाकंन से भिन्न है ?

   What is cost Accounting ? Is it different from financial Accounting?

लघु उत्तरीय प्रश्न :(Short Answer Questions)-

1.Discuss the development of cost Accounting in India?

भारत मे लागत लेखाकंन का विकास बताइये ?

2. What are the characteristics of an ideal cost Accounting system?

एक आदर्श लागत लेखाकंन प्रणाली की विशेषताएं क्या है ?विवेचना कीजिए।